देख-देख राधा-रूप अपार।
अपरूब के बिहि आनि मिलाओल खिति तल लाबनि-सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।
कत-कत लखिमी चरण-तल नेओछए रंगिनी हेरि विभोरी।
करु अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

शब्दार्थ: अपरूब: अपूर्व रूप, सुंदर; बिहि: विधि, ब्रह्मा; आनि मिलाओल: लाकर मिला दिया; खिति तल: क्षितिज, पृथ्वी; लाबनि-सार: लावण्य का सार; अनंग: कामदेव; हेरए- देखकर; अथीर: अधीर, अस्थिर, चंचल; मनमथ: कामदेव; मधि: मध्य; लखिमी: लक्ष्मी; नेओछए: न्यौछावर होना; रंगिनी: सुन्दरी; विभोर: मुग्ध; अहोनिसि: अहर्निश, रात-दिन; कोर: गोद; अगोरि: अगोरते हुए, रखवाली देना, पहरा देना।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियों के रचनाकार मैथिल कोकिला विद्यापति हैं। उपरोक्त पद उनकी 'पदावली' के 'रूप वर्णन' खंड में संकलित है।

प्रसंग: विद्यापति ने इस पद में राधा के रूप-रंग का सुंदर चित्रण किया है। कवि ने राधा की सुंदरता का वर्णन करते हुए यह दिखाया है कि उनकी सुंदरता के सामने कामदेव और कृष्ण से लेकर लक्ष्मी तक उनके चरणों के बराबर भी नहीं हैं।

व्याख्या: हे सखी राधा के रूप की अपार सुंदरता को देखो! ऐसा लग रहा है कि विधाता ने क्षितिज और पृथ्वी के सुंदरतम् तत्वों को लेकर इस अपूर्व सौंदर्य को रचा है। राधा के प्रत्येक अंग की सुंदरता को देखकर सौंदर्य के देवता कामदेव मूर्छा खाकर व्याकुल हो जाते हैं। करोड़ों कामदेवों के सौंदर्य को मथ कर जिस कृष्ण का सौंदर्य बना है, वे भी राधा के अपूर्व सौंदर्य से मूर्छित होकर पृथ्वी में मध्य में गिर जाते हैं। सुंदरी राधा का रूप इतना आकर्षक और मुग्ध करने वाला है कि उनके चरणों में कितनी ही लक्ष्मी का सौंदर्य न्यौछावर हो जाता है। कवि विद्यापति कहते हैं कि मेरे मन में यह अभिलाषा उत्पन्न होने लगती है कि वे कमल के सामान इन चरणों को अपनी गोद में रखकर दिन-रात रखवाली (सेवा) करें।

विशेष:

1. राधा की सौंदर्यातिशयोक्ति वर्णन और कृष्ण का अत्युक्ति वर्णन हुआ है।

2. मथिली भाषा का प्रयोग।
3. 'अपरूब के बिहि' में गम्योत्प्रेक्षा अलंकार, 'अंगहि अंग अनंग' में वृत्त्यनुप्रास है।